मैत्रेयीकृति

हिन्दी ई-पत्रिका

विद्यार्थियों के लिए, विद्यार्थियों के द्वारा

वर्ष-2 अंक-4 जुलाई-दिसंबर 2020

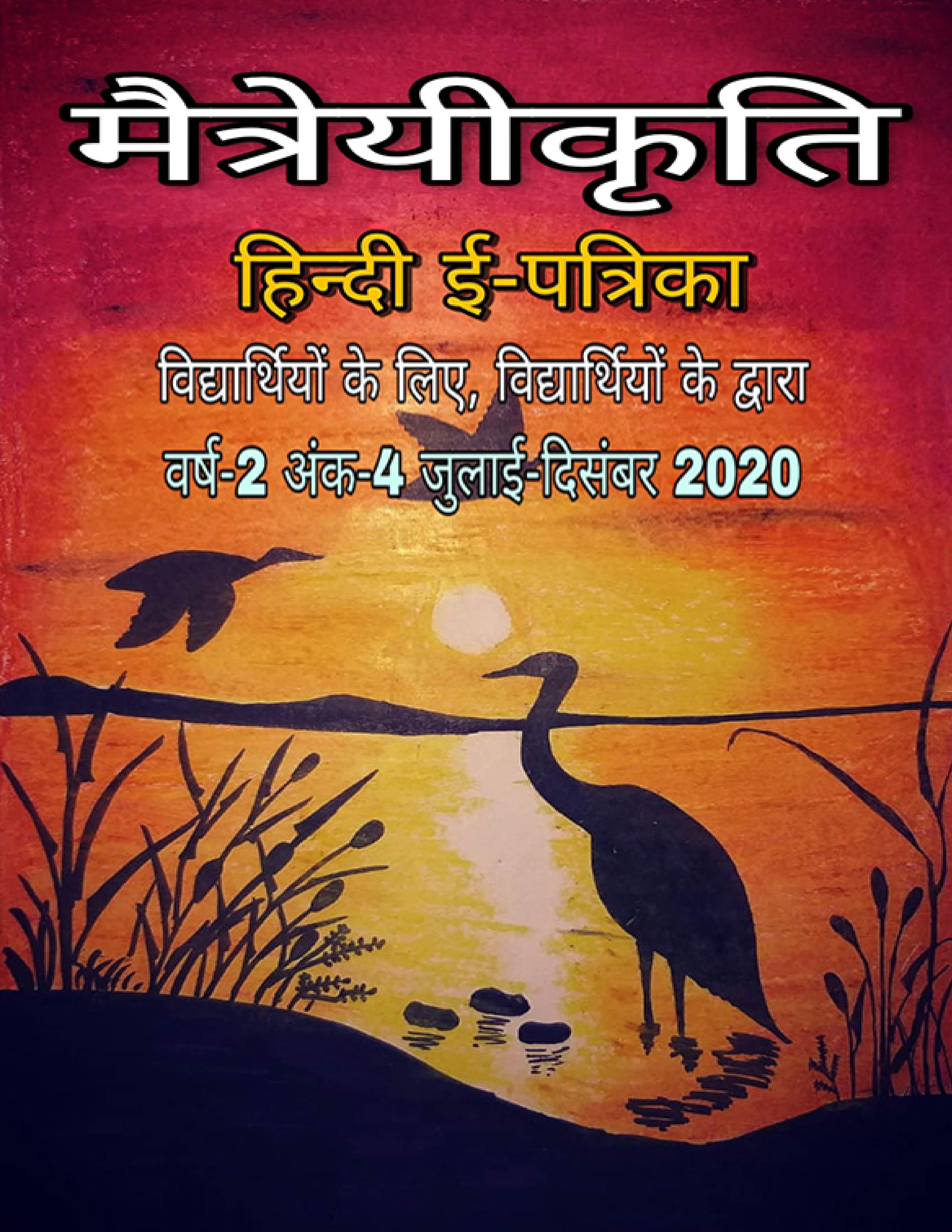

मैत्रेयीकृति (हिंदी ई पत्रिका)

मैत्रेयी कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय

NAAC द्वारा ए ग्रेड प्राप्त

डॉ हरित्मा चोपडा

डॉ पुष्पा गुप्ता

अनीता

अंकिता

मोनिका

आस्था

मोनिका मिश्रा

संरक्षण एवं परामर्श
डॉ हरित्मा चोपड़ा
प्राचार्या
संपादन
डॉ पुष्पा गुप्ता
हिंदी विभाग
आवरण पृष्ठ
अनीता
हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

चयन एवं टंकण
अंकिता, मोनिका
हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष
आस्था, मोनिका मिश्रा
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष
तकनीकी संपादन
अंकिता, मोनिका
हिंदी विशेष,तृतीय वर्ष

शुभकामना संदेश

कॉलेज के संदर्भ में वर्ष के उत्तरार्ध के साथ नये सत्र का आगमन जुड़ा होता है, लेकिन वर्ष 2020 असाधारण रहा है। इसमें पहले शिक्षण-प्रक्रिया और बाद में प्रवेश-प्रक्रिया पूर्णतःऑनलाइन हो गयी| पठन-पाठन और अन्य शैक्षणिक गतिविधियों के साथ प्रत्येक स्थिति में संतुलन बनाए रखने का प्रशिक्षण देना भी कॉलेज का प्राथमिक दायित्व है, जिसे पूरा करने के लिये प्रत्येक स्तर पर सभी प्रयास किये जाते हैं। संपूर्ण प्रक्रिया ऑनलाइन होने के कारण इस अवधि में शिक्षकों और विद्यार्थियों का आपस में प्रत्यक्ष जुड़ाव संभव नहीं हो सका, लेकिन शिक्षकों से प्राप्त निर्देशों को आधार बनाकर ही प्रतिभावान विद्यार्थियों की रचनात्मकता ऐसे समय में भी लगातार अपने लिए नए मार्गों का संधान करती रही| उन्हीं की सक्रिय रचनात्मक ऊर्जा का परिणाम 'ई' पत्रिका का यह अंक है।

शुभकामनाओं सहित

डॉ. हरित्मा चोपड़ा

प्राचार्या

संपादकीय

समय का पहिया लगातार अपनी गति से चलता है, कैसी भी परिस्थिति उसके मार्ग का अवरोधक नहीं बन पाती। मनुष्य की जिजीविषा की तुलना समय के साथ की जा सकती है क्योंकि मनुष्य साधारण-असाधारण,सरल-कठिन सभी परिस्थितियों में कहीं भी, कैसे भी और किसी भी तरह आगे बढ़ने का मार्ग ढूंढ ही लेता है| उसकी इसी आंतरिक शक्ति के आलोक में कोरोना काल में मानवीय व्यवहार को समझा और परखा जा सकता है, फिर आज तो तकनीक के रूप में मनुष्य के पास एक बेहद शक्तिशाली सहायक भी उपलब्ध है, जिसके सहयोग से मनुष्य ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नई प्रविधियों का सूत्रपात किया है। इस असाधारण समय में जब संपूर्ण कार्य-व्यवस्था ऑनलाइन हो गयी है तो विद्यार्थियों की रचनात्मकता ने भी अपनी कार्य-पद्धति में परिवर्तन कर लिया। इस क्रम में हमारे युवा रचनाकारों ने जहां कोरोना काल के विविध अनुभवों को शब्दबद्ध करते हुए अपनी पैनी और सजग दृष्टि का परिचय दिया, वहीं अन्य विषयों पर भी अपनी कलम चलाई है। यदि रंगों के माध्यम से स्वयं को अभिव्यक्त करने वाले विद्यार्थियों की मनमोहक कलाकृतियाँ पत्रिका का अंग हैं तो स्मृतियों के गलियारे की सैर कराने वाले छायाचित्र भी आकर्षण का बिंदु हैं। यह ऊर्जा उत्तरोत्तर नये शिखरों का स्पर्श करती रहेगी, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है।

पत्रिका का चौथा अंक आप सबको सौंपने से पहले मैं प्राचार्या डॉ. हरित्मा चोपड़ा के प्रति हार्दिक आभार एवं कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ क्योंकि प्रत्येक स्थिति में उनकी सहृदयता और मार्गदर्शन ही पत्रिका का जीवनाधार है। विभाग तो प्रत्येक स्थिति में धन्यवाद का अधिकारी है ही। अंत में पत्रिका से प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों रूपों में संबंद्ध विद्यार्थियों का हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ जिनके कारण पत्रिका का यह अंक रूपाकार पा सका|

डॉ. पुष्पा गुप्ता
हिंदी विभाग

छात्र संपादकीय

कॉलेज के प्रथम वर्ष से ही मैं किसी न किसी रूप में कॉलेज पत्रिका के साथ जुड़ी हुई हूँ और तृतीय वर्ष तक आते-आते मैं इस क्षेत्र के बहुत से अनुभवों से समृद्ध हो सकी हूँ । इस बार मुझे ज्यादा प्रसन्नता हुई क्योंकि मुझे विभाग की 'ई' पत्रिका “मैत्रेयीकृति” से जुड़ने का अवसर मिला, जिसमें मुझे संपादकीय मंडल के अन्य विद्यार्थियों के लिए मार्गदर्शक और सहायक दोनों प्रकार की भूमिकाओं को वहन करने का दायित्व मिला। पत्रिका के 'ई' स्वरूप के कारण हिंदी टाइपिंग और संपादन से जुड़ी ढेरों जानकारियों ने मेरे अनुभव में नये आयाम जोड़े।

पत्रिका से जुड़ने के बाद मैंने यह जाना कि कभी-कभी अपनी क्षमता और एक निश्चित दायरे से बाहर निकल कर सीखने का जोखिम उठाना भी कितना लाभकारी और आनंददायक हो सकता है। जो केवल वर्तमान में ही नहीं भविष्य में भी विकास के पथ को सुगम बनाता है।

अंकिता रावत
हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

अनुक्रमणिका

कोरोना डायरी

1	साल 2020	पायल	2
2	कोरोना क्यों आए हो	पिंकी कुमारी	3
3	आशा	नेहा	3
4	कोरोना में आत्मनिर्भर भारत	प्रियंका प्रजापति	4
5	देश में संकट	अंकिता रावत	4
6	मजदूरों की व्यथा	शुभ्रा त्रिवेदी	5
7	2020 और हम	दिव्या शर्मा	5
8	दुनिया की होती दुर्दशा	नेहा	6
9	कोरोना टाइम 2020	एलीना थापा	7
10	2020 और हम	शाइस्ता	8-9
11	क्यों आया यह कोरोना काल	प्रियंका	10
12	कोरोना काल	नीमा सिंह	10
13	देश की उदासी	मोनिका सैनी	11
14	भावना	अंशिका वर्मा	11-12
15	कोरोना काल	गीता देवी	12
16	कोरोना और जीवन शैली	भावना शर्मा	13-15
17	लॉकडाउन	मनीषा लोहिया	15-16
18	गली में लोग नहीं	प्राची	16-18
19	लॉक डाउन का पहला दिन	मोनिका मिश्रा	18-19
20	लॉकडाउन में शांति ही शांति	नीलम	19-20
21	दोस्ती का वास्तविक अर्थ	कहकशा	20-21

विविधा

22	स्वरचित स्लोगन		23-24
23	मेरी बहन तू ग्रेट है	वंदना मिश्रा	24
24	जोकर	प्रिया कुमारी	25
25	समय	प्रिया कुमारी	25
26	ऐसी थी नहीं	अंशु तिवारी	26
27	कुछ और ही मंजूर था	अनिता कुमारी	26
28	सपनों को उगने दो	नेहा	27
29	उड़ने दो	रचना	27
30	हमारी हिंदी	रीमा बिस्वास	28
31	ना जाने क्यों	वंदना	28
32	जिंदगी	मीनाक्षी कुमारी	29
33	मां	गरिमा गौतम	29
34	मां	उपासना मीना	30

35	मैं बदलने लगी हूं	अनिता	30
36	दोस्ती	अंजू	31
37	घुमक्कड़ी का रिश्ता	तान्या लोहिया	31
38	जीवन एक संघर्ष है	गरिमा गौतम	32
39	विवाह और समाज	पीयूषी वर्मा	32
40	नारी और सुरक्षा	काजल	33
41	सपनों की दुनिया	कोमल नागर	34

रंग -संयोजन

42	मुझे उड़ने दो	महिमा शर्मा	36
43	मुरली मनोहर	महिमा शर्मा	37
44	अद्भुत प्रकृति	महिमा शर्मा	38
45	एकदंत दयावंत	भावना शर्मा	39
46	सारंग	भावना शर्मा	40
47	नीलांबुज	पिया धवन	41
48	चक्षु कलश	पिया धवन	42
49	आद्या शक्ति	अनिता कुमारी	43
50	चंद्रमौलि	अनिता कुमारी	44
51	आमने सामने	अनिता कुमारी	45
52	कुरंग	मोनिका मिश्रा	46
53	रात में गुफ्तगू	मोनिका मिश्रा	47
54	खिलती कलियां	मोनिका मिश्रा	48

कैमरा और कॉलेज परिसर

55	छायाचित्र 1	प्रिंकी यादव	50
56	छायाचित्र 2	प्रिंकी यादव	51
57	छायाचित्र 3	अंशिका वर्मा	52
58	छायाचित्र 4	आरती यादव	53
59	छायाचित्र 5	पायल	54
60	छायाचित्र 6	पायल	55
61	छायाचित्र 7	नीतू देवी	56
62	छायाचित्र 8	नीतू देवी	57
63	छायाचित्र 9	नीतू देवी	58
64	छायाचित्र 10	नीतू देवी	59
65	छायाचित्र 11	सारिका दुबे	60
66	छायाचित्र 12	सारिका दुबे	61
67	छायाचित्र 13	सारिका दुबे	62

कोरोना डायरी

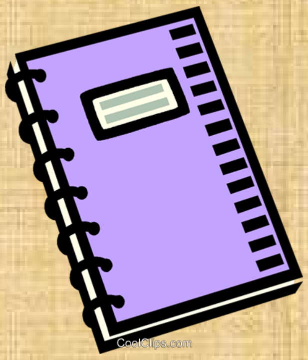

साल 2020

साल 2020
खुशियों का पैगाम लाए,
यह सोचकर सब ने
मन में खुशियों के
दीप जलाए।
परन्तु यह क्या?
कोरोना वायरस
हुआ उजागर
जो है,
मौत का सौदागर।
यह दानव निकला,
कुछ लोगों की
लापरवाही से।
जिसने पूरे जहां को `
अपने अंदर निगला।
सोचा था साल 2020
नई उम्मीद
लेकर आएगा,
ज्ञात ना था
यह साल ऐसे
घर में बीत जाएगा।
इस दानव ने दुनिया को
ऐसा नाच नचाया
आज खुद को घर में
हमने बंद पाया।
एक अनदेखे
दानव का
ऐसा प्रकोप छाया,
बेकसूर लोगों को
इसने कफ़न पहनाया।
दुनिया में हुआ
जब तक
इस महामारी का शोर,
यह बढ़ चुका था
तबाही की
विकरालता की ओर।
बेबस मनुष्य
अपने घर में
 कैद हो गया
विकास का प्रतीक
पहिया
अपनी जगह जम गया।
इस महामारी ने
जीवन में
व्यापक बदलाव किया।
गले लगाने के बदले
नमस्कार को अपनाया।
त्योहारों में
गुलजार रहने वाले
बाजार सूने पड़े थे।
अब मास्क से ढके चेहरे
नजर आने लगे थे।
अब ना जाने
कब निकलेंगे हम
घर से होकर निडर।
क्या हम चल पाएंगे
बेखौफ़ अपनी डगर।
कहते हैं
हर रात की
सुबह होती है
निराशा में
आशा छुपी होती है।
उम्मीद है
यह समय
जल्द ही बीत जाएगा|
आने वाला समय
नई खुशियों का
संगीत लाएगा।

पायल
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

कोरोना! क्यों आए हो कोरोना?

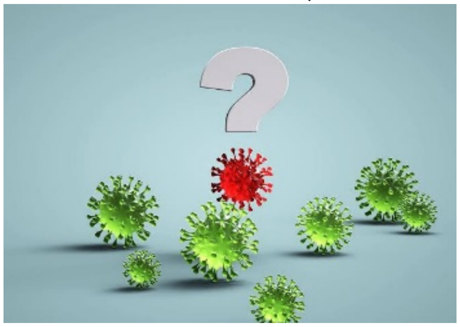

कोरोना!
क्यों आए हो कोरोना?
यहां लोगों में
पहले दूरियां कम थीं
जो तुम और
बढ़ा रहे हो|
तुम्हारे आने से
छीन गई
हमारी आजादी,
हम अपने ही घर में
पक्षी की तरह
पिंजरे में कैद हो गए|
कोरोना!
क्यों आए हो कोरोना?
वो हमारी
कॉलेज की मस्ती
वो कक्षा में
प्रोक्सी लगाना
किसी की
और बाद में
पकड़े जाना,
बात कर अपने
अध्यापकों से
काम करना,
जीवन में कुछ कर
दिखाने की इच्छा
पर वो पूरे दिन
गार्डन में बैठे रहना
तुम्हारे आते ही
मानो सब बदल गया|
कोरोना!
क्यों आए हो कोरोना?
एक बच्चे से उसका
बचपन छीन रहे हो
क्या पहले ही बच्चे
चारदीवारी में कैद नहीं थे?
जो अब तुम भी आ गए
कोरोना!
क्यों आए हो कोरोना?
क्यों सब मजदूरों को
बेरोजगार बना दिया,
अब बस करो कोरोना
सब को जीने दो|
दुनिया से डर को
अब खत्म करो|
कहां पहले खुशी से
बाहर निकलते थे,
अब डर-डर कर
बाहर निकलते हैं|
कोरोना!
क्यों आए हो कोरोना?
जाओ, कोरोना जाओ!

पिंकी कुमारी
हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

आशा

कोरोना वायरस का संक्रमण
हमारे लिए एक
मुश्किल समय लेकर आया है।
कोरोना काल को
पूरा एक साल होने आया है।
लेकिन आशा के
खुले कुछ द्वार हैं।
कोरोना वैक्सीन
जिसका नाम है।
लोगों की पीड़ा को हरने का
जिम्मा जिस ने उठाया है।

नेहा
हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

कोरोना में आत्मनिर्भर भारत

साल 2020 आया है।
संग अपने
कोरोना महामारी लाया है।
यह वर्ष 2020 नहीं
कोरोना काल कहलाया है।
चाइना का है माल यह,
दुनिया पर कब्ज़ा
करने आया है।
कोरोना तू है
अनजान बहुत,
भारत के पास है
तुझे हराने के औज़ार बहुत।
चाइना का माल
ज्यादा दिन ना
टिक पाया है|
ए! कोरोना फिर तू क्यों
इतना इतराया है।
यह भारत देश हमारा है।
इसकी प्राकृतिक शक्ति को
सदा सबने पहचाना है।
भारत की संस्कृति को
सब चाहते अपनाना है।
हाथ मिलाने को
कहते थे जो संस्कृति।
अब नमस्कार का
आदर करने लगे|
हाँकते थे डींगें,
जो देश अपनी-अपनी
शक्तियों पर।
अपने देश की प्रकृति पर
भारत भी अब इतराया।
आत्मनिर्भर भारत
अब सबके सामने आया है।
सिद्ध किया है कि गर
कोरोना को अगर है हराना
आयुर्वेद को होगा अपनाना।।

प्रियंका प्रजापति
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

देश में संकट

जूझ रहा है
देश हमारा
कितने अवसादों से!
हर व्यक्ति का
जीवन अब है स्वयं
उसी के हाथों में |
सब आस लगाए
बैठे हैं,
कब यह
संकट जाएगा?
ना जाने और
कितने मासूमों के
गले यह पड़ जाएगा|
दुख में भी
मनुष्य यूं ही
कुछ अकेला है!
क्योंकि दूरियां
है जरूरी
यह संकट ही
कुछ ऐसा है|

अंकिता रावत
हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

मजदूरों की व्यथा

वह चला था मीलों
जीने को
पर यह जिंदगी ही
दगा दे गई ।
वह चला था चाहत में
किसी को पाने की,
पर वो चाहत ही
दगा दे गई ।
उसकी आंखों में थी
मां की मूरत,
पर जेब में ना थी
गांधी की सूरत।
ज्यादा ना था
उसके पास कुछ भी।
ताकत थी,
वो ढल चली थी|
चाहत थी
वो थक चुकी थी ।
उसने तो सोचा था
कि बस,
अब और ना करेगी
उसकी बूढ़ी मां इंतजार
अब और ना
सहेगा वह अलगाव ।
पर उसे क्या पता कि
वह इंतजार
जन्मों का दे गया ।
उस मां की मूरत को
बना गया
आंसू की सूरत ।।

शुभ्रा त्रिवेदी
हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

2020 और हम

शंखनाद सुन वायु का,
सह प्रकोप जटायु-सा,
स्थापित समाज भी
झूलस रहा है
वेदना से भरा कंठ
क्षमाप्रार्थी-सा
आंखें मूंद रहा है ।
पिपासा काल की,
किसी के भाल की,
मृत्यु देख रहा मनुज
स्थापित मृग-चाल सी।
मन में है टीस
सांसें सबकी खींच-खींच
हिंसक है समय,
चुनौती तो सहेंगे हम
काल का काल बनेंगें|
सभ्य समाज
तिलमिला रहा है।
पीड़ा से ध्वस्त मन में
निर्वेद सहज
लड़खड़ा रहा है।
विश्व था जो बंटा-बंटा
हमसे है अब डरा-डरा
होगी फिर से
नभ सी सुन्दर
सबकी छटा-छटा।

दिव्या शर्मा
इतिहास विशेष, द्वितीय वर्ष

दुनिया की होती दुर्दशा

हुआ था जो वर्षों पहले,
आज फिर वह बात
होती नजर आई है
2020 ने हमें एक बार
फिर दुनिया की दुर्दशा
होती दिखाई है।
पहले सा अब
कुछ रहा नहीं,
थम गया संसार है।
एक वायरस के हाथों में
आ गई इंसान की
ये जान है।
ऐसी हुई है दुर्दशा
चारों और महामारी है।
लगता है ऐसा
मानो पृथ्वी एक बार
फिर गुस्से में आई है|
2013 में हुई जो घटना
फिर उसने दोहराई है
शायद इसीलिए
अपने साथ फिर वो
बाढ़ को लायी है ।
पूरे संसार की आंखें
फिर से एक बार
नम नजर आई है|
2020 ने हमें
दुनिया की दुर्दशा
होती दिखाई है ।
आज पूरा संसार मानो
फोन, लैपटॉप आदि
उपकरणों में समा गया
जो रह गया इन से वंचित
वह भूखा मरता
नजर आ गया ।
अभी तो केवल
हुई थी शुरुआत,
टिड्डियों ने मिलकर की
सारी फसल बर्बाद|
आज एक बार फिर
रोया किसान है,
आज दाने-दाने को
तरसता यह इंसान है|
महामारी ने कर दी
बंद मशीनें सारी,
जिस कारण हो गई बंद
दुकानें सारी,
कितनों ने खोया
रोजगार है ।
क्या यही नया साल है?
पर खत्म होगी
यह परीक्षा,
खत्म होगा यह सन्नाटा,
फिर एक बार सुनेगा
मालिक हमारी यह पुकार
मिलकर लड़ेंगे जब
सभी फिर एक बार ।
इसी आशा से सब
मिलकर दीप जलाते हैं ।
अपने मन के भीतर
उम्मीद की
एक नई किरण
जगाते हैं|
आओ मिलकर सब
भारत मां का
नारा लगाते है

नेहा
हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

कोरोना टाइम 2020

आई विश्व में ऐसी आपदा,
जिससे 2020 बन गया
एक हादसा।
सारे देश इसकी
चपेट में आए,
अभी तक दिखलाई
ना दिया उपाय|
इस बीमारी से
पाने का छुटकारा |
लाखों की जानें गयीं,
लाखों लोग हुए
बेरोजगार,
लाखों लोग हुए भूखे,
लाखों ने अपने खोए,
लाखों हुए
इसका शिकार |
कैसा समय है ये
हर किसी की
जुबान पे सिर्फ
कोरोना कोरोना ही
सुनने को मिलता है|
हुए परिचित
ऐसे शब्दों से,
जिन्हें पहले कभी
ना सुना था
कवारण्टीन,
लॉकडाउन,
डिसइंफेक्ट,
वेबिनार,
सोशल डिस्टैन्सिंग,
सैनिटाइजिंग--
अब देखो हर इंसान की
जुबां पे बस ये शब्द ही
सुनने को मिलता है|
3 मिनट तक
हाथ धोते रहो,
एक-दूसरे से दूरियाँ
बना कर रखो,
मास्क पहन कर रखो,
सैनीटाइजर का
उपयोग करते रहो,
बस यही कुछ
सुनने को मिलता है|
मन में है सबके
उम्मीद की किरण
और है आशा
कि यह एक दिन
समाप्त हो जाएगा|
लोग फिर से
पहले की तरह
जीना शुरू करेंगे,
फिर से चहकेंगे
गली-मोहल्ले,
फिर से होगा
बाज़ारों में शोर|
बस यही
उम्मीद की किरण
लेकर आज का वक़्त
जीते जा रहे हैं बस
जीते जा रहे हैं|

एलिना थापा
हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

2020 और हम

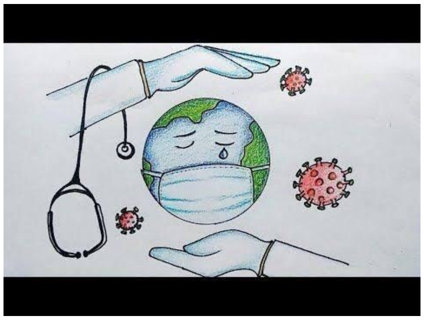

2020 का आरंभ
समस्याओं से हुआ|
जंगल में आग,
हवाई जहाज में दुर्घटना,
बेरुत में घातक विस्फोट
कोरोना महामारी
लॉकडाउन, भुखमरी, मृत्यु,
अन्य समस्याएँ शामिल हैं|
ऑस्ट्रेलियाई बुश फायर,
दिल्ली में सांप्रदायिक दंगे,
प्राकृतिक आपदाएँ
2020 में ही
अधिक देखने को मिलीं ।
वक्त के साथ,
सदा बदलते ताल्लुक
कितना मिलते थे तब गले,
लेकिन अब हाथ
ना मिलाया ग|
कुदरत को देखो
क्या खूब रंग बदला है?
परिंदों को आजाद करके
इंसानों को कैद कर रखा है|
यह शहरों का सन्नाटा
बता रहा है,
इंसान ने कुदरत को
नाराज बहुत किया है|
अमीरों द्वारा लाई गई
महामारी हवाई जहाज से|
गरीबों को मीलों दूर
पैदल चलकर
परिणाम भुगतना पड़ा|
चाइना का माल खूब चला,
नाम है कोरोना|
इस महामारी से निपटने में
पूरे विश्व को आया रोना|
अब अमीर का
हर दिन रविवार हो गया|
और गरीब है अपने
सोमवार के इंतजार में
अब अमीर का
हर दिन परिवार का हो गया
और गरीब है अपने
रोजगार के इंतजार में।
दौड़ती-भागती जिंदगी से
कुछ यूं आराम मिल पाएगा|
क्या सोचा कभी इंसान ने
कि वायरस
अपनों के संग आएगा।
सारे मुल्कों को नाज था
अपने-अपने परमाणु पर,
कायनात बेबस हो गई
एक कीटाणु से|
सोचा था
क्या अदृश्य दुश्मन
कोरोना वायरस के
वेश में आएगा,
घर बैठे विश्व की
अर्थव्यवस्था नष्ट कर जाएगा।
घर के अंदर रहना
एकमात्र शस्त्र
इस दुश्मन से बचाएगा|
कितना भी ताकतवर
हो दुश्मन,
घर की लक्ष्मण रेखा
लाँघ ना पाएगा।
जंग की बंदूक, तोप, जहाज
धरा का धरा रह जाएगा|
इस लड़ाई में
समाज का रक्षक
डॉक्टर बन जाएगा।

धन्यवाद है उनको,
जिन्होंने जीवन
आसान किया है|
हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई
सबको मान दिया है।
डॉक्टर, नर्स, सफाईकर्मी
या हो सैनिक वर्दी वाला
दूध, सब्जी, बिजली, पानी
या हो टीवी, रेडियो,
पेपर वाला-
डाल कर खुद को खतरे में
हम सबका जीवन
सरल बनाया।
मैं खुश हूं, अब घर पर
अपनों के साथ हूं|
अभी कुछ दिन सुकून से
परिवार के पास हूं|
वह वक्त जो ख्वाहिश था,
आज हकीकत लग रहा है|
देखो ना बेचारे मंडे को ,
वह संडे लग रहा है।
2020 में मैंने
अपने परिवार को
बिखरते हुए देखा है|
कोरोना का शिकार
होते देखा है|
मैंने भाई-बहन का
एक कदम अस्पताल
तो दूसरा कदम
घर में देखा है|
बिना कुछ खाए-पिए,
बिना सोए रोते देखा है
मैंने अपने पड़ोसियों को
अन्य लोगों को
भूख से तड़पते देखा है
इस वर्ष मैंने लोगों को
घर से बेघर होते देखा है,
मजदूरों को भोजन के लिए
लंबी कतारों में
धूप में तड़पते देखा है
मैंने इस साल
बहुत कुछ सीखा है।
आज हम डरे हुए हैं,
जीवित है, पर मरे हुए हैं|
लाचार मजदूरों को
रोते देखा है|
बाप को सूनी आंखों से
तड़पते देखा है|
मां की गोद में
बच्चे को मरते देखा है|
गरीबों का खुलेआम
रोष देखा है
तो मध्यमवर्ग का मूक
आक्रोश देखा है|
मजदूरों को अपने गांव
पैदल जाते देखा है
तो रास्ता भूलकर
कड़क गर्मी में मरते देखा है|
गरीबों को अस्पतालों मैं
लुटते देखा है,
तो निर्दोषों को
बेवजह पिटते देखा है।
दुश्मन का जो चेहरा है
वो बदल चुका है
पहले होते थे मुल्क
पर अब एक वायरस
दुश्मन बन चुका है|
चूँकि नया दुश्मन है
तो उपाय भी
नया करना होगा|
फौज को पीछे रखकर
खुद आगे आना होगा|
दूर-दूर रहकर भी
हम करीब रह सकते हैं,
घर बैठे-बैठे ही हम
सिपाही बन सकते हैं|
याद करेगा पूरा विश्व
कोरोना का यह अभियान

शाइस्ता
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

क्यों आया यह कोरोना काल

क्यों आया
यह कॉरोना काल
सर पर पड़ा
मुश्किलों का जाल।
किसने सोचा था
ऐसा भी दिन आएगा,
मनुष्य तो मनुष्य
ईश्वर के घर में भी
ताला लग जाएगा |
किसे पता था,
आएगी ऐसी भयंकर
और अदृश्य महामारी।
क्यों आया यह कोरोना काल?
आ रहा रह-रहकर यह स्वप्न
मानो बुला रही
खेतों की फसल।
खड़ी है जो खेतों में
कह रही थक कर मुझसे।
आ ले जा, मुझे अपने घर
क्यों आया
यह कोरोना काल?
कैसे जाऊं
अपने घर को,
कैसे लाऊं घर अपने
फसल को।
पत्नी, बच्चे घर में अकेले
कैसे काटेंगे?
फसल बिन मेरे|
क्यों आया
यह कोरोना काल?
चल पड़ा पैदल ही अब
मजदूर होकर मजबूर
जान हथेली में
लेकर अपने
आवास की ओर|
ऐसा तो कभी किसी ने
स्वप्न भी ना देखा होगा।
इतना भयंकर होगा
2020 का यह साल
क्यों आया
यह कोरोना काल
सर पर पड़ा
मुश्किलों का जाल।।

प्रियंका
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

कोरोना काल

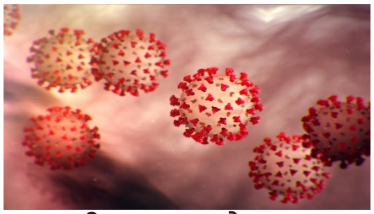

साल की शुरुआत से
हालत हुई बेहाल है।
आदमी लेकिन बजाता
तालियाँ, करताल है।
आज केवल हम नहीं
मजबूर सारा विश्व है|
क्योंकि अब
हर शख्स के लिए
कोरोना काल है,
जिन्दगी दुश्वार है|
लॉकडाउन और ख़ौफ
ने जिन्दगी में
ला दिया भूचाल है|
जाति-धर्म और
अन्य मसलों पर
घृणा घिनौनी चाल है|

नीमा सिंह
हिन्दी विशेष, द्वितीय वर्ष

देश की उदासी

देश की हालत
देख जरा,
क्या थी और
अब क्या हो गई है?
पहले हरियाली और
मुस्कान की स्मृतियाँ थी।
क्या यह वैसी ही हैं?
प्रश्न करता है भारत ।
देश पहले
सोने की चिड़िया
कहलाता था,
अब यहां गरीबी अशिक्षा
बेरोजगारी दिखती है।
पहले भारत में
हंसी की लहर थी,
अब यहां
उदासी छा गई है|
कहीं भूख, कहीं प्यास
किसी का
ना रहा साथ,
कैसी हालत हुई देश की,
इंसान दुखी
और देश दुखी
कभी भूकंप, कभी तूफान
दे रहे आह्वान
देश की हालत पर
आ रहा है रोना
क्योंकि हर जगह
पर है कोरोना।

मोनिका सैनी
हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

भावना

मत होना
नाराज़ या निराश,
कभी ऐ इंसान
हमेशा हँसते-खेलते
गुज़ार तू अपनी ज़िन्दगी|
भावनाओं को समझ,
भावनाओं की कद्र कर,
बस इसी का
नाम है ज़िन्दगी|
जान गँवाने से
कुछ न मिलेगा,
तु मुसीबतों का सामना
जमकर किया कर|
निराशा में से
बाहर निकलना है तो
मेरे दोस्त दिल की
बातें खुल कर
बताया कर,
बड़ी नाजुक होती हैं
ये भावनायें,
इन्हें महसूस
करना पड़ता है|
गलती भले ही
आपकी ना हो
पर रुठों को
मनाना भी
आप ही को पड़ता है,
जैसे चातक का जीवन
व्यर्थ है बारिश की
पहली बूँदों के बिना,
वैसे ही मानव का
जीवन व्यर्थ है
भावनाओं के बिना|

कठिनाइयाँ तो
बहुत आएँगी जिंदगी में,
उन्हीं से ज़िन्दगी
बनी है हमारी,
तू बस कठिनाइयों
को मात देता चल |
आगे बस
जीत है तुम्हारी|
कोरोना
तो जाएगा एक दिन,
उसे हर हाल में
जाना ही है ,
पर अपने
शरीरिक स्वास्थ्य के
साथ-साथ
मानसिक स्वास्थ्य को भी
ठीक रखना ज़रूरी है

अंशिका वर्मा
हिन्दी विशेष ,द्वितीय वर्ष

कोरोना काल

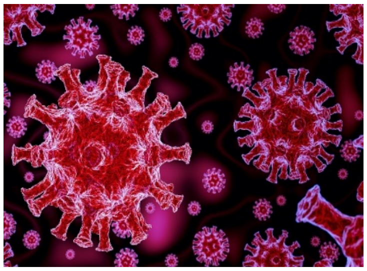

चीन के वुहान शहर से शुरू हुए कोरोना वायरस संक्रमण ने लगभग पूरी दुनिया को अपनी चपेट में ले लिया है| हर रोज मौत के आंकड़े सैकड़ों की संख्या में बढ़ते जाते हैं और हजारों की संख्या में संक्रमितों के।

पूरी दुनिया में इस वायरस के कारण डर का माहौल है लेकिन इन सबके बीच उम्मीद की बात सिर्फ इतनी है कि बहुत से मामलों में लोग ठीक भी हुए हैं।

चित्रकूट ग्रामोदय के एग्रीकल्चर विभाग के प्रोफेसर गुप्ता जी अपने परिवार से कोसों दूर चित्रकूट में नौकरी कर रहे थे। वह एक बहुत अच्छे प्रोफ़ेसर के साथ एक बहुत अच्छे व्यक्ति भी थे। उनका व्यक्तित्व आज भी सभी विद्यार्थी याद करते हैं ।एक दिन अचानक से गुप्ता जी कोरोना वायरस की चपेट में आ गए। जबकि वह एकदम फिट थे और अपने स्वास्थ्य का भी बहुत ही अच्छे से ख्याल रखते थे| उन की स्थिति देखकर उन्हें
उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया । वे इतने कमजोर हो चुके थे कि ना ठीक से बात कर पा रहे थे और ना ही ठीक से खाना खा पा रहे थे| जब मैंने उनका हाल जानने के लिए फोन किया तो वे एकदम बात करने की हालत में नहीं थे।
मैंने पूछा- गुप्ता जी कैसे हैं?
बिल्कुल भी ठीक नहीं हूं? पांच-छ दिन से खाना भी नहीं खा पा रहा हूं| हाँफते हुए स्वर में उन्होंने कहा| मैंने पूछा घर से कोई आ पाया| उन्होंने बड़े दुखी मन से कहा कि मैंने सब को मना कर दिया है| सर, मैं आपसे मिलने आ सकता हूं| नहीं, यहां खतरा है|
सर, कुछ जरूरत का या खाने पीने का सामान ले आता हूं। नहीं, जब जरूरत होगी तब मैं आपको बुला लूंगा| इतनी बात हुई और गुप्ता जी की सांस इतनी फूल रही थी कि आधी बात समझ में आ रही थी और आधी नहीं आ रही थी। फिर शाम तक गुप्ता सर पंचतत्व में विलीन हो गए| मुझे बड़ा दुख हुआ कि जो व्यक्ति अपने स्वास्थ्य को लेकर इतना जागरूक था उन्हें यह सब हो गया| उन्होंने अंत समय सब को एक संदेश भी दिया कि मास्क लगाओ, नहीं तो अंत में दो गज़ कफ़न भी नसीब नहीं होगा|अंत समय में उनकी बीवी- बच्चे और परिवार वाले भी उनसे मिल नहीं पाए| चित्रकूट में ही उनका अंतिम संस्कार हुआ| पूरा ग्रामोदय परिवार अभी भी बहुत दुखी है।

गीता देवी
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

कोरोना और जीवनशैली

कोरोना संक्रमण से फैलने वाली एक बीमारी है| जो हाथ मिलाने, साथ खड़े होने ,अधिक भीड़ वाली जगह पर जाने से संक्रमित व्यक्ति के सम्पर्क में आने से फैलता है| जिसके लक्षण जैसे खाँसी,बुखार , जुकाम, सिर दर्द, सांस लेने में रुकावट हैं,जिसके फैलने का कारण है केवल एक वायरस । चीन के एक लैब से उत्पन्न एक बीमारी जो आज वैश्विक स्तर पर महामारी का रूप ग्रहण कर चुकी है और उसका भुगतान आज पूरा विश्व जान माल की हानि से कर रहा हैं। "जान हैं तो जहान है " दिया गया नारा जो आज सत्य साबित हो रहा हैं। जहाँ व्यक्ति का केवल एक उद्देश्य है अपने जीवन की सुरक्षा करना । एक ऐसी बीमारी जिसने पूरे विश्व को हिला के रख दिया है तथा जिससे पूर्ण विश्व की अर्थव्यवस्था चरमरा गई में | दिनोंदिन कोरोना के बढ़ते केस हर व्यक्ति के दिलो दिमाग को दहलाने वाले होते जा रहे हैं। कैसे एक वायरस भारत में महाराष्ट्र, तेलंगाना, केरल, तमिलनाडु फिर दिल्ली में अपनी दहशत फैलाता गया। देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भारत में 21 दिनों का लोकडाउन घोषित किया अर्थात पूरे भारत में अनिवार्य वस्तु के अलावा किसी तरह की दुकानें, मॉल, होटल,ट्रांसपोर्ट नही खुलेंगे। एक बहुत ही सटीक शायरी जो आज के समय में प्रासंगिक नज़र आती हैं-

"घर से निकलने की जरूरत क्या है,
मौत को गले लगाने की जरूरत क्या है|
सब जानते हैं बाहर की हवा है बड़ी कातिल,
इन हवाओं से उलझने की जरूरत क्या है?
एक नेमत है जिंदगी इसे सम्भाल कर रखो, कब्रिस्तान को सजाने की जरूरत क्या है?
दिल बहलाने के लिए घर में ही वजह काफी हैं, यूँ गलियों में भटकने की जरूरत क्या हैं।

आज कोरोना विश्व स्तर पर मनुष्य को शारीरिक व आर्थिक दोनों रूपो में प्रभावित कर रही हैं। सभी लोगो को घर में रहने हाथों को बार बार धोने तथा मास्क के प्रयोग का संदेश दिया जा रहा हैं। 14 अप्रैल तक के इस लॉकडाऊन के बाद इसकी तारीख और बढ़ा कर 3 मई तक कर दी गई| फिर हालात न सुधरने के कारण इसे 17 मई तक बढ़ा दिया गया |आगे हालात नहीं सुधरे तो और भी बढ़ सकता हैं-

खाने से पहले
सदा हाथ धोना,
कभी भी न भूलेंगे|
न होगी बीमारी
ये आदत हमारी
डेटोल - डेटोल हो

आज ऐसे छोटे-छोटे सन्देश और संकेत वास्तविकता में व्यापक होते नज़र आ रहे हैं। आज 2020 एक ऐसा समय आ गया है जहाँ मनुष्य अपने जीवनयापन के स्रोत तक को छोड़कर अपने गांव जा रहे हैं। आज देश लॉकडाउन के उपरांत उत्पन्न बहुत सी समस्याओं का सामना कर रहा है। मजदूर वर्ग व गरीब वर्ग दो पहर की रोटी तक के लिये तरस रहे हैं। विद्यार्थियों के जीवन की 10-12 वी कक्षायें सबसे अहम सीढी होती हैं उनके परीक्षा परिणामो में बाधा आ गयी है जिस के कारण वो बहुत चिंतित नज़र आ रहे हैं। सभी के लिये ऑनलाइन क्लासेज उपलब्ध कराई गई । जिसमें कुछ सकारात्मकता है, कुछ न होने से तो कुछ होना बेहतर है| इसमें कुछ नकारात्मकता भी है क्योंकि जब अध्यापिका स्वयं विद्यार्थियों के साथ कक्षायें लेती हैं उसमें

एक माहौल बनता हैं तथा अध्यापिका के साथ वाचिक सम्बन्ध से ज्ञान भी प्राप्त होता हैं अर्थात ऑनलाइन क्लासेज को स्रोत नही बनाया जा सकता। गरीब वर्ग , मध्यवर्गीय व्यक्ति आज के समय में सबसे ज्यादा परेशानी से जूझ रहे हैं तथा जिस प्रकार कोरोना अपने पैरों को पूरे विश्व में निरन्तर पसारता जा रहा है, उससे आने वाला भविष्य बहुत प्रभावित होता नजर आ रहा है-

"मौत की राह थी कितनी,
अपनों को अपनों से अलग देखा,
महामारी जो आयी इस बरस
मैंने लाशों को भी तन्हा देखा।"

कोरोना से बचाव के लिये सरकार अनेक कदम उठा रही है। वह मजदूर और गरीब लोगों के लिये भोजन उपलब्ध कराने की कोशिश कर रही है। सरकार द्वारा उठाये जा रहे कदमो में जनता का सहयोग अनिवार्य हैं। यदि अभी की स्थिति को देखकर भी व्यक्ति बीमारी की गम्भीरता को स्वीकार नही करेगा तो महामारी से बचना असम्भव सा हो जाएगा। महामारी की लड़ाई में हमारी ढाल बने हैं-- डॉक्टर, सफाई कर्मचारी, पुलिस विभाग-जो अपने योगदान से देश को बचाने के लिये तत्पर हैं, हमें उन्हें सहयोग देना चाहिए। सरकार द्वारा निर्मित आरोग्य सेतु ऐप्प के माध्यम से, कॉल की कॉलर टोन के माध्यम से , सोशल मीडिया के माध्यम से यही समझाया जा रहा है कि

"stay home stay safe"

तथा सूचनाएं प्रसारित की जा रही हैं। आज बहुत से लोग पढ़े-लिखे होकर गंवारों वाली बातें कर रहे हैं जहाँ एक पढ़े हुए पुत्र से अनपढ़ माँ-बाप घर में रुकने तथा कोरोना जैसी महामारी से बचने के लिये आग्रह कर रहे हैं।

"यह मौत का मंजर हैं
यहाँ घर में बैठा ही सिकंदर है"

कोरोना तथा उसके बाद लगे इस लॉकडाउन से पूर्ण जीवनशैली प्रभावित हो गयी हैं। अमीर से लेकर गरीब वर्ग तक का व्यक्ति आज घरो में बैठकर अपने जीवन को बचाना ही एक मात्र उद्देश्य मान रहे हैं :-

गंभीर, विशाल, बड़ी महामारी
संयम रखना बड़ा जरूरी,
जंग अभी हैं इसकी जारी।

व्यक्ति अपने ही घर में सिमट कर रह गया हैं| बड़े बड़े सेलेब्रिटीज़ अपने घरों में बैठकर अपना कार्य स्वयं कर रहे हैं। मध्यवर्गीय व्यक्ति कहीं न कही अपनी जीवन की पूंजी से,अनिवार्य वस्तुओं से जीवनयापन कर रहा है। विद्यार्थी वर्ग अपने भविष्य को लेकर चिंतित हैं कि परीक्षा किस तरह देंगे| ऑनलाइन क्लासेज के कारण उन्हें पूरे दिन अपने फ़ोन में आंखें गड़ाकर रखनी पढ़ती हैं, जिससे उनकी आंखों पर बहुत बुरा असर पड़ रहा हैं| आज व्यापारी वर्ग बहुत चितिंत हैं उनके पास काम करने का कोई स्रोत नही बचा| लेकिन इसमें सकारात्मक भाव भी हैं जैसे व्यवसाय में व्यस्त व्यक्ति आज अपने बच्चों अपने परिवार को समय दे सकता है। जहाँ घर में व्यक्ति एक दूसरे के विचारों से अनभिज्ञ हैं उन्हें जानने का अच्छा समय है। पर्यावरण आज बहुत ही स्वच्छ हो गया है। प्रदूषण का स्तर बहुत नीचे चला गया है। सड़कों पर गाय जैसे जानवरों को निकलते देख रहे हैं। नदियों का जल स्वच्छ हो गया है, पीने योग्य हो गया है। बिहार के सीतामढ़ी से हिमालय पर्वत साफ नजर आ रहे हैं तथा जंक फ़ूड का प्रचलन बहुत अधिक हो गया था, वह बन्द हो गया हैं । घर में भी साग-सब्जियों को भली प्रकार से धोकर इस्तेमाल किया जा रहा हैं । इसी प्रकार हम देख सकते हैं कि पूरा भारत आज अपने घर में बैठा हैं। केवल अपनी सुरक्षा के लिए चिंतित है| लेकिन जब लोग एक-दूसरे की सहायता करते हैं तो उनका देश के प्रति प्रेम व्यक्त होता हैं और उनका योगदान नज़र आता हैं। भारत

की संस्कृति एक अखंड भारत के रूप में थी, जो आज भी नज़र आती है। इस मुश्किल घड़ी में भारत का हर एक राज्य एकता व अखण्डता का परिचय एक दे रहा हैं, कहा भी गया है कि-

"**मान लो तो हार हैं, ठान लो तो जीत हैं**"

हमें संयम से इस घड़ी का सामना करना चाहिए। सरकार द्वारा उठाये गए क़दमों का पालन करना चाहिए| उनके साथ रहकर इस जंग में योगदान देना चाहिए । यह समय घबराने का नही संयम व धैर्य तथा समझदारी से काम लेने का हैं-

"**जीवन ही मनुष्य की सम्पति है|**

इसे बचाने की कोशिश होनी ही चाहिए|

भावना
हिंदी विशेष,तृतीय वर्ष

लॉकडाउन

लॉकडाउन जिसका अर्थ है –तालाबंदी| लॉकडाउन एक ऐसी व्यवस्था है जो किसी आपदा या महामारी के वक्त लागू की जाती है | आज भारत में ऐसी स्थिति देखी जा सकती है जिस कारण पूरे भारत में लॉकडाउन लगा हुआ है| आज पूरी दुनिया में कोरोना एक ऐसी महामारी बन गयी है जिसका न तो अभी तक कोई इलाज किया जा सकता है और न ही पूरे तरीके से रोकथाम | भारत सरकार द्वारा पहला लॉकडाउन 24 मार्च 2020 को लगाया गया था ताकि इस महामारी पर थोड़ा नियंत्रण किया जा सके| यह पहला लॉकडाउन 21 दिनों का रखा गया, फिर धीरे-धीरे इसमें बढ़ोतरी की गयी ताकि कोरोना से बचाव किया जा सके |इस लॉकडाउन के चलते भारत तथा अन्य देशों में बहुत सी मुसीबतों व परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है| इन परेशानियों के चलते भारतीय जनता के रोज़गार पर इतना प्रभाव पड़ा है कि उन्हें एक समय का अनाज भी नहीं मिल पाया |जिस कारण लोगों ने अपना घर बार छोड़ दिया, उन्हें दूसरी जगहों पर आसरा लेना पड़ा| जो लोग अपने घरों को छोड़ कर रोज़गार के लिए शहरों में आये थे, उन्हें अपने गांव वापस लौटना पड़ा ताकि वे आपने परिवार की देख रेख कर सकें| इस लॉकडाउन के चलते रोज़गार के साथ-साथ भारत की अर्थव्यवस्था पर भी बहुत अधिक प्रभाव पड़ा है| सभी दुकानें, बड़े-बड़े मॉल, जिम आदि से जो भी पैसा मिलता था वह सब आना बंद हो गया| बाहरी सामानों का लेनदेन व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उसकी आवाजाही बंद कर दी गयी, जिस कारण अर्थव्यवस्था डगमगा गयी | शेयर बाजार में भी घाटा हुआ| इन सभी परेशानियों के साथ-साथ सबसे अहम् प्रभाव "शिक्षा"पर पड़ा है| स्कूल, कॉलेज, एन. जी.ओ. जो भी संस्था शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रही थी वे सभी बंद हो गयीं | जिस कारण बच्चे अपनी पढ़ाई पर ध्यान नहीं दे सके | स्कूलों की परीक्षाओं को रोक दिआ गया, जिससे विद्यार्थी परेशान हुए और अपने भविष्य में जो भी मुकाम हासिल करना है उस पर विचार विमर्श नहीं कर सके | इन सबके चलते एक फायदा यह हुआ है कि प्रदूषण में कमी आयी है| प्रदूषण इतना कम हुआ कि नीला आसमान साफ दिखाई देने लगा और हवा भी शुद्ध होती गयी |जिससे अस्थमा जैसी बीमारियों में भी कमी आयी| लॉकडाउन के चलते सभी वस्तुओं की कीमतें बढ़ा दी गयी | जो सामान सही दाम पर मिलता था ,वह अत्यधिक दामों पर बिक रहा है | लॉकडाउन के चलते सबसे बड़ी बात यह रही सरकारी वाहनों पर रोक लगा दी गयी और इसमें एक मेट्रो ही ऐसा साधन है, जिससे जनता अत्यधिक सफर तय करती थी |मेट्रो के बंद होने से भी

सरकार को अधिक घाटा हुआ और जनता को भी आने-जाने में अधिक परेशानियों का सामना करना पड़ा |लॉकडाउन में सभी दफ्तरों को भी बंद कर दिया गया |लॉकडाउन जनता की सहूलियत और सुरक्षा के लिए गया है और इसे सफल बनाना हम सभी का कर्त्तव्य है|

मनीषा लोहिया
हिंदी विशेष ,तृतीय वर्ष

गली में लोग नहीं, उनकी आवाज़ें थीं

सभी लोग अपने-अपने घर की बालकनी में बैठे बातें कर रहे थे। कुछ लोग बाहर भी बैठे थे। सभी की जुबान पर एक ही नाम था– कोरोना। इसी बीच एक बहुत ही तेज़ आवाज़ गूँजी – 'इस बीमारी का अभी तक इलाज़ भी नहीं मिला।' इतनी-सी बात ही किसी के जुबान से निकली और सभी लोगों ने बातें करनी शुरू कर दीं। सभी के दिल व दिमाग़ में एक ही बात घूम रही थी कि आख़िर यह बीमारी कब जाएगी?

एक आवाज़ और आई –"अब तो हाथ मिलाने से भी डर लगता है कि पता नहीं कब क्या हो जाए? वैसे भी इस बीमारी के लक्षण तो तीन-चार दिन तक दिखाई भी नहीं देते। भगवान जाने क्या होगा?"
बस, अब सभी लोगों में यही बातें होने लगीं। एक और धीमी-सी आवाज़ आई – 'अब तो इस बीमारी से इतना डर लगता है कि घर से निकलने की हिम्मत ही नहीं होती।'

एक बालकनी से दूसरी बालकनी तक कोई झाँकता भी दिखाई नहीं देता। कोई अकेले गली के भीतर पेड़ के नीचे बैठा है। सभी एक-दूसरे से दूर-दूर रहकर भी बातें करते हुए दिखाई दे रहे हैं। वहीं कहीं दूर से बहुत तेज़ आवाज़ आई – 'अब तो दूर-दूर ही रहें सभी, सो ही अच्छा है।'
लोग एक-दूसरे से मिलने से कतराते नज़र आ रहे थे। कुछ लोग तो इस बीमारी के नाम से इतना डर गए थे कि वो घर से निकलते ही नहीं थे। लोग मार्केट से सीधा दो-तीन महीने का राशन ले आए थे ताकि उन्हें बार-बार मार्केट ना जाना पड़े। उस दिन मार्केट में इतनी भीड़ थी कि पैर रखने-भर की जगह भी नहीं थी। सभी लोगों के चेहरे पर मास्क था और दुकानों पर इतनी भीड़ थी कि साँस भी नहीं ली जा रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे पूरा मोतीबाग ही मार्केट में आकर बस गया हो। वैसे तो पहले किसी भी महीने में ऐसी भीड़ देखने को नहीं मिलती थी| पर अब एक ही दिन में इतनी भीड़ आ गई थी कि दुकानदार भी परेशान हो गया था। कुछ लोग ऑर्डर देकर जा रहे थे तो कुछ लोग साथ में ही सामान ले जाना चाहते थे। कोरोना की वजह से लोग इतने परेशान हैं कि उन्हें ड्यूटी पर जाने में भी डर लगता है। पता नहीं बस में किसको क्या तकलीफ़ हो रही हो|

शाम के पाँच बज गए हैं। कॉलोनी एकदम शांत पड़ी है, जैसे यहाँ कोई रहता ही नहीं| ना तो बच्चों के चिल्लाने की आवाज़ आती है और ना ही गाड़ियों के हॉर्न की। बिलकुल शांत माहौल है। बस पेड़ों पर केवल पंछी ही दिख रहे हैं। उनकी आवाज़ अब सुनाई देने लगी है।

एक आदमी रोज़ की तरह अपनी कुर्सी पेड़ के नीचे डालकर बैठा हुआ है। उनके आसपास बस पेड़ों की सरसराती हवा व पंछियों के अलावा कोई नहीं है। इस कोरोना ने सभी को अपने डर से घरों में बंद करवा दिया है। अब तो फ़ोन का रिंगटोन भी कोरोना के नाम से ही शुरू होता है। टीवी चलाओ तो कोरोना, फ़ोन चलाओ तो कोरोना और टिकटॉक पर भी कोरोना ही छाया हुआ है। पहली बार ऐसी महामारी आई है जो दुनिया के सभी शहरों, देशों और राज्यों में बुरी तरह से फैल चुकी है। लोग टीवी देखकर और भी ज़्यादा घबरा जाते हैं। जब भी न्यूज़ में देखो तो आधे घंटे के अंदर ही चालीस-पचास मरीज़ बढ़ते जा रहे हैं। टीवी पर ये सब देख, घर में बैठे लोगों के भीतर जो डर बस रहा है वो सभी को अकेला करता जा रहा है। अचानक महामारी के कारण किसी को कुछ भी समझ नहीं आ रहा है। अभी शाम के साढ़े छह ही बजे हैं लेकिन गली में केवल दो-तीन लोग ही दिख रहे हैं जो कि काम से बाहर जा रहे हैं। उनके अलावा कुछ लोग अपनी-अपनी बालकनी में खड़े हैं, कुछ लोग पौधों में पानी डाल रहे हैं। पहले गली में पाँच बजे ही औरतें पेड़ के नीचे बैठी नज़र आती थीं, लेकिन अभी कोई भी दिखाई नहीं दे रही हैं। सभी लोग सेफ़्टी के साथ अपने घरों में हैं। अगर बाहर भी निकलना होता है तो सैनिटाइज़र लेकर निकलते हैं ताकि बार-बार हाथ को साफ़ कर सकें। पहले रात का खाना खाने के बाद सभी लोग घूमने निकल पड़ते थे। लेकिन अब सारी गलियाँ, सड़कें और पार्क सूने पड़े हैं। मानो हमारे मोहल्ले और शहर में हॉलीवुड की वायरस के शिकार वाली फ़िल्म लाइव चल रही हो और सभी ज़ोम्बी बने घूम रहे हों। इसे देख डर बढ़ता ही जा रहा है।

पापा ने ऑफ़िस से आकर न्यूज़ चैनल लगा दिया। सभी सीएम, पीएम, पीओ बैठे बातें कर रहे हैं सरकार का फ़ैसला था कि अब पूरे देश में लॉकडाउन की जरूरत है। शायद मोहल्ले के सभी लोग ये ख़बर सुन रहे थे! अचानक सभी के सभी अपने घर से बाहर निकल आए, जैसे तब निकलते हैं जब कोई भूकंप आता है। बाहर निकलकर एक-दूसरे से बातें करने लगे कि लॉकडाउन हो रहा है। चारों ओर आवाज़ें ही आवाज़ें थीं। यह बात कुछ ही मिनटों में पूरी कॉलोनी में आग की तरह फैल चुकी थी।

टीवी पर प्रधानमंत्री ने घोषणा की कि 'रात बारह बजे से लॉकडाउन होगा। कल से लोगों को घर में ही रहना होगा। ना कोई ऑफ़िस खुलेगा, ना कोई दुकान और ना कोई फ़ैक्ट्री। सभी लोगों को खाना उनके घर पहुँचाया जाएगा। जो भी बिना काम घर से बाहर निकलेगा तो पुलिस उसे हिरासत में ले लेगी और उसे चालान भरना पड़ेगा।'

प्रधानमंत्री की गंभीर आवाज़ में कही बातों ने लोगों के सामने एक बहुत बड़ी परेशानी को ला खड़ा किया था। घरों में खाने को कुछ नहीं था। सड़कों पर एक भगदड़-सी मच गई जिससे डरावना माहौल बन गया था। लोगों की बातें यहाँ से वहाँ घूमने लगी थीं जिनमें डर, घबराहट और भविष्य में होने वाली तकलीफ़ों की आहटें थीं।

तभी रोती हुई एक आवाज़ आई – 'सरकार यह सब काम रात को ही क्यों करती है?'
दूसरी लंबी साँस वाली आवाज़ आई – 'चलो ठीक ही किया, इससे लोगों की संख्या कम हो जाएगी। ज़्यादा बढ़ेंगे नहीं।'
गुस्से वाली तीसरी आवाज़ – ' लॉकडाउन में क्या करेंगे इतने दिन?'

बातचीत के केंद्र में यही सब था। सभी अपनी-अपनी बालकनी में बैठे थे। कुछ लोग थोड़ी-थोड़ी दूरी पर गली में ही चक्कर लगा रहे थे तो कोई दरवाज़े पर ख़ामोश बैठा सोच रहा था।

परेशानी भरी आवाज़ – 'यह सरकार हमेशा झटका ही क्यों देती है? और वो भी रात में?'

उसी की ताल में ताल मिलाती एक और आवाज़ – 'जब भी कुछ कहती है तो हिलाकर रख देती है। इक्कीस दिन का लॉकडाउन कैसे काटेंगे? यह तो बड़ी समस्या आ खड़ी हुई है।'

सवाल करती आवाज़ – 'चलो हमारी छोड़ो, जो लोग कहीं और काम कर रहे हैं उनका क्या होगा? वे तो वहीं फँस जाएँगे।'

इन्हीं बातों में दस बज गए। तभी एक और आवाज़ आई – 'आज ही घूम लो रात के बारह बजे तक। कल से तो बाहर निकलना बंद ही है। अब तो सरकार की बात माननी पड़ेगी, हम क्या कर सकते हैं| आवाज़ तेज़ होते-होते धीमी होती हुई बाहर की तरफ चली गई। सभी अपने-अपने घरों में घुस गए। लेकिन उस रात सभी की नींद उडी हुई थी। घर के बाहर, फ़ोन पर, टीवी पर,टिकटॉक पर सभी जगह कोरोना ही कोरोना छाया हुआ था। इतना तो कोई फ़िल्मी हीरो भी फेमस नहीं हुआ होगा। कोरोना ने धीरे-धीरे अपना दबदबा गली-मोहल्ले से होते हुए देशों तथा राज्यों में भी फैला लिया था। अब सभी लोग अपने घरों में जा चुके थे। बालकनी सूनी थी, गली सूनी थी, दरवाज़े सूने थे और दूर दिख रही सड़कें वीरान-सी हो चली थीं।
प्राची
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

लॉकडाउन का पहला दिन ।

शीला दीदी आपने कहा था आज हम बाहर घूमने जाने वाले हैं । सुबह के ६ बजे ही गुगु अपनी बड़ी बहन से बोलता है वो झुंझला कर उठ कर बैठ जाती है और बोलती है "क्या रट लगा रखी है अभी तो सुबह हुई है।
अपनी खिड़की की तरफ से आ रही सूरज की रोशनी को देखते हुऐ बोलती हैं और हल्का सा मुस्कुरा कर सिर झुका लेती है। तभी गुगू बाल्कनी से नीचे की ओर झाँक कर देखता है और सोचता है कि सुबह के ६ बज गए है । लेकिन आज राजू अंकल की मोटर बाईक अभी भी खड़ी है। क्या बात है ?आज अंकल दफ्तर नहीं जा रहे तभी शीला गूगू को आवाज लगाती हैं और कहती है गूगू देखो समाचार| गूगू समाचार सुन कर रोने जैसा मुंह बना लेता है ।

मानो उसका कुछ छीन लिया गया हो| शीला बोलती है आज से लॉकडाउन हो गया है | मैंने रात को समाचार नहीं देखा था वरना मैं तुझसे घूमने चलने का वादा नहीं करती |गूगु बिस्तर पर लेट जाता है, उसका चेहरा देख कर ऐसा लगता है जैसे उसका कोई बहुत बड़ा सपना टूट गया है। शीला उसके पास बैठ जाती है और उसके बालों को सहला कर कहती है कुछ दिनों की ही तो बात है| जब ये कोरोना ख़त्म हो जाएगा फिर हम घूमने चलेंगे| ऐसे में बाहर जाना ठीक नहीं है| शीला उसे समझती है लेकिन गुगु अपनी जिद पर अड़ा हुआ था| बहुत समझाने के बाद गुगु ने शीला की बात मानी |गुगु अभी बहुत छोटा है उसकी समझ से बाहर है कि कोरोना क्या हैओर लॉकडाउन क्या है? वो अपनी दीदी की बात मान जाता है ओर खुश हो जाता है कि थोड़े दिन बाद हम फिर से घूमने जायेंगे।

मोनिका मिश्रा
हिन्दी विशेष, द्वितीय वर्ष

लॉकडाउन में शांति ही शांति

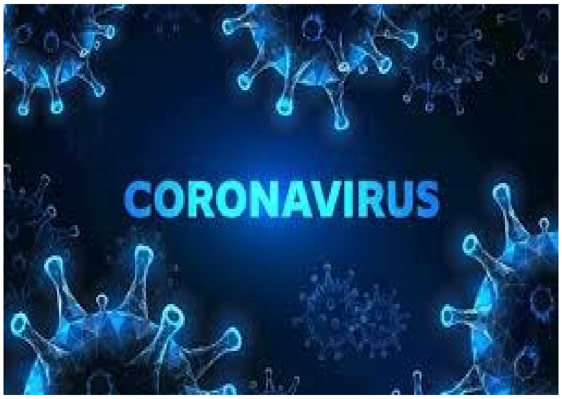

सभी लोग अपने घरों में बैठे थे| वहीं दूसरी तरफ दो औरतें बाहर खड़ी हुई आपस में कोरोना के विषय में बातें कर रही थीं । एक का नाम सीता और दूसरी का नाम राधा था। सीता और राधा शादीशुदा थीं |सीता के दो बच्चे थे और राधा के एक बेटा था। सीता गरीब परिवार से थी और राधा मध्यम परिवार से थी| सीता का पति रोज मजदूरी करके पैसे कमा कर लाता था और राधा का पति बैंक में काम करता था। एक दिन सीता और राधा का परिवार साथ में बैठकर टीवी देख रहे थे तभी समाचार में उन्होंने देखा कि प्रधानमंत्री मोदी जी ने रात 12.00 बजे से घर से निकलने पर पाबंदी लगा दी है अर्थात लॉकडाउन कर दिया है यह देख कर वे सभी परेशान हो गए और सोचने लगे कि आगे क्या होगा?सीता अपने पति से सहानुभूति जताते हुए कहती है कि प्रधानमंत्री जी ने जो भी किया है हमारे भलाई के लिए किया है इससे हम संक्रमित होने से बचेंगे। अगले दिन सीता और राधा साथ में बैठ बातें करती हैं|

सीता: राधा अब तो कोरोना और बढ़ता ही जा रहा है| देश- विदेशों में छोटे-छोटे राज्यों में भी बढ़ रहा है। जिसके कारण मोदी जी ने लॉकडाउन लगा दिया है लेकिन हमारे जैसे लोगों का क्या जो रोज़ाना मजदूरी कर खाते हैं।

राधा: हां लॉकडाउन हमारी भलाई के लिए लगाया गया है जिससे महामारी ज्यादा ना फैले| हां मजदूरों को भी परेशानियों का सामना करना पड़ेगा, लेकिन हमारे प्रधानमंत्री जी और सीएम केजरीवाल जी ने मुफ्त में राशन बांटने का वादा किया है जिसके चलते हर गली और मोहल्ले में मुफ्त में खाना बांटा जाता है जिससे मजदूरों की सहायता हो।

सीता: हां राधा! तुम सही बोल रही हो, सरकार ने हर तरह से हमारी मदद की है क्या यह लॉकडाउन हर चीज के लिए है क्या?

राधा-: नहीं, यह लॉकडाउन सभी चीजों के लिए नहीं है| सब्जियों की दुकान, मदर डेयरी, राशन की दुकान खोली जाएंगी लेकिन हमें सामाजिक दूरी बना कर रखनी होगी और मास्क लगाना होगा।

सीता-: हां, राधा तुम सही बोल रही हो, हमें सामाजिक दूरी का ध्यान रखना होगा और समय-समय पर अपने हाथों को धोते रहना होगा।

राधा-: यदि हम सावधानी बरतेंगे तो यह महामारी हमें छू भी नहीं पाएगी। राधा आगे कहती है इस लॉकडाउन में सब का एक फायदा जरूर हुआ है।
सीता: क्या फायदा हुआ है इस लॉकडाउन से?
राधा: हमारा यह फायदा हुआ है कि पूरे समय लोग काम में लगे रहते थे। घर पर कब क्या हो रहा है, किसी को कुछ भी पता ही नहीं होता था? बस जुबान और दिमाग पर काम ही काम रहता था। इस लॉकडाउन में सभी अपने घरों में रहेंगे, साथ बैठेंगे, बातें करेंगे और साथ बैठकर खाना खाएंगे। कुछ दिन अपने काम को छोड़कर अपने परिवार पर ध्यान दे पाएंगे।
सीता-: यह बात तो सही है, सब साथ रहेंगे, साथ बैठकर खाना खाएंगे और खुशी से रहेंगे। लेकिन बच्चों की पढ़ाई का नुकसान होगा।
राधा-: नहीं, बच्चों की पढ़ाई का नुकसान नहीं होगा।
सीता-: क्यों नहीं होगा? लॉकडाउन में स्कूल कॉलेज सब तो बंद रहेंगे।
राधा-: हां! स्कूल कॉलेज तो बंद रहेंगे| लेकिन हमारी सरकार ने ऑनलाइन क्लासेस की व्यवस्था की है। जिससे पढ़ाई का नुकसान नहीं होगा और बच्चे घर बैठे पढ़ाई कर पाएंगे|
सीता: अच्छा! सारे बच्चे घर बैठे ऑनलाइन क्लासेस ले लेंगे लेकिन उनका क्या जिन लोगों के पास ऑनलाइन क्लासेस लेने का कोई साधन नहीं है।
राधा: हां! पर क्या करें? वह भी अपने आसपास रहने वाले साथियों से मदद ले लेंगे। जब तक यह ऑनलाइन क्लासेस चलती हैं तब तक ऐसे ही काम चलाना पड़ेगा।
सीता: जब तक कोरोना की दवाई नहीं आ जाती तब तक ऐसे ही काम चलाना होगा।
उसी समय वहां से नीतू नाम की औरत भी गुजरती है |उनकी बातें सुनकर वह भी उनके पास आकर बैठ जाती है और कोरोना और बच्चों की बातें करने लगती है।
नीतू: कोरोना ने सब कुछ खराब कर दिया है।गलियों में बच्चों के खेलने की आवाजें तक सुनने को नहीं मिलती| लोगों के चलने की चहल-पहल कहीं खो सी गई है| गलियां सुनसान पड़ी हुई हैं ।
राधा और सीता एक साथ बोलते हुए- हां बहन तुम सही कह रही हो कोरोना की वजह से ना तो लोग खुद निकलते हैं और ना ही अपने बच्चों को बाहर निकलने देते हैं।
बात करते -करते उन्हें महसूस होता है कि शाम होने लगी है तो वह अपने-अपने घरों की ओर रवाना हो जाती हैं।
नीलम
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

दोस्ती का वास्तविक अर्थ

आज हम ऐसे समय में आ गए हैं, जहां पर कहने को सब अपने हैं पर असल में कोई अपना नही है |जब इंसान को किसी दूसरे शख्स की जरूरत होती है तब वह उसे अपना दोस्त मित्र या हमदर्द मानता है| आजकल यह जो दोस्त नामक शब्द है वह केवल और केवल नाममात्र का हो गया है अर्थात सिर्फ मतलब निकालने के लिए इस शब्द का प्रयोग किया जाता है| इस कोरोना वायरस की दुनिया में हमने कई ऐसे दोस्त देखे हैं जिन्होंने इस मुश्किल समय में हमारा साथ छोड़ दिया| उन लोगों के असली रंग भी देखे हैं| जब हम किसी इंसान को दोस्त सखा या अपना मित्र मानते हैं तो इसका अर्थ केवल यह नहीं होता

कि वह एक शब्द बनकर रह जाए| अपितु इसका वास्तविक अर्थ उन दोनों व्यक्तियों के बीच का एक गहरा संबंध अथवा रिश्ता होता है| जिसे हम अपना खास दोस्त समझते हैं, उससे हमारा एक अटूट बंधन सा बन जाता है किंतु वह सिर्फ हमारा इस्तेमाल करके चला जाता है| किसी और खास के उसकी जिंदगी में आ जाने से वह दोस्ती जैसे पाक रिश्ते को तोड़ बैठ होता है। पता नहीं लोग ऐसा क्यों करते हैं? हमने इस कोरोनावायरस में कई ऐसे दोस्त खोए हैं जो हमारे स्कूल के समय से दिल के बहुत ही पास रहते थे| किंतु अब वह हमसे बहुत दूर, हमारी जिंदगी से दूर हो गए| हमारे कॉलेज के कई दोस्त वह इस कोरोना वायरस के वजह से 'सोशल डिस्टेंसिंग' की वजह से वैसे ही दूर हैं | किंतु जो स्कूल के वक्त बनाए गए दोस्त, उस समय किए गए सभी वायदे, अगर एक छोटी सी गलती के कारण वह रिश्ते सरलता पूर्वक टूट जाते हैं तो मान लेना चाहिये कि उस रिश्ते की डोर मजबूती से नहीं बंधी थी जिस वजह से वह टूट गया।

दोस्ती का वास्तविक अर्थ अपना समय निकालना नहीं होता, उनको समय देना भी होता है| उनकी तकलीफ समझना भी होता है| उनकी समस्याओं के समय उनके साथ खड़ा रहना भी होता है| उन्हें कभी अकेला महसूस न हो ऐसा व्यवहार करना होता है| किंतु आज लोग दोस्ती का मायना केवल और केवल मतलब निकालना समझते हैं| जब तक उस इंसान का मतलब है तब तक उसकी दोस्ती है मतलब खत्म होता जाती है तो वह उसके द्वारा किए गए वादे दोस्ती सब भूल जाता है वह रिश्ता इस वजह से तोड़ देता है। इस कोरोनावायरस के समय हमारे कई खास दोस्तों से हमारे दोस्ती टूटी है और कॉलेज ना खुलने की वजह से भी कई ऐसे दोस्त हमसे दूर है। असल दोस्ती तो दिखावा है सिर्फ नाम मात्र के दोस्त रह गए हैं|

कहकशा
हिंदी विशेष,तृतीय वर्ष

विविधा

<u>हिंदी दिवस विशेष</u>
स्वरचित स्लोगन

1
हर भाषा की इज्जत करो पर,
हिंदी को न बेइज्जत करो|

2.
माफ करना ऐ मातृभाषा ,
तुझे तेरे अपने ही दगा देते हैं|
अंग्रेजी बोलूं तो पढ़ा-लिखा ,
हिंदू बोलूं तो अनपढ़ कहते हैं|

3
मेरी माटी, मेरा देश,
मेरी भाषा, मेरा परिवेश,
हिंदी के बिन सब अवशेष|

सलोनी कुमारी
राजनीति विज्ञान विशेष, द्वितीय वर्ष

1
आधुनिक समाज के लिए
अंग्रेजी को जरुर अपनाना है |
लेकिन अपनी मातृभाषा
हिंदी को नहीं भुलाना है ||

सोनू कुमारी
हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

1
माना अंग्रेजी का प्रचलन
सारे जग में है परंतु
हर हिंदुस्तानी के दिल में
हिंदी भाषा का ही
दीपक जलता है |

2
जन-जन को जो भाती है वह
हमारी राष्ट्रभाषा
हिंदी कहलाती है |

पायल
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

1
मातृभाषा और राष्ट्रभाषा
हिंदी भाषा के सब नाम हैं।
जन -जन तक सूचना पहुंचाना
इसी का तो काम है।।

2
कोयल अपनी भाषा है बोलती,
इसलिए आजाद है।
पर तोता बोलता है दूसरों की भाषा,
इसलिए वह जीवन भर कैद है।।
हमें तोते की तरह नहीं
कोयल की तरह बनना है।
अंग्रेजी नहीं हिंदी को अपनाना है।।

अंकिता कुमारी
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

1
हमने यह संकल्प लिया है,
भारत माँ का मान बढाएंगे,
जिस भाषा ने हमको सम्पन्न किया है,
उसे ही राष्ट्रभाषा हम बनाएंगे |

रीमा विश्वास
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

1
स्वर- व्यंजनो से आभूषित
है हमारी हिंदी ,
जन-जन की अभिव्यक्ति का
माध्यम है हमारी हिंदी |

राखी
हिंदी (विशेष, द्वितीय वर्ष

1
हम नहीं कहते कि
अन्य भाषाओं का
मत करो विस्तार।
बस हम इतना
कहते हैं हिंदी का
मत करो बहिष्कार।।

शुभ्रा त्रिवेदी
हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

1
हिंदी से हैं हम भारतीय,
हिंदी में है हम भारतीय।
हिंदी से शुरू हमारी वाणी,
हिंदी पर खत्म
हमारी यह कहानी।।
शिल्पा प्रजापति
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष
1
अंग्रेजी एक सड़क जैसी है,
बहुत दूर ले जाती है,
हिंदी तो घर है अपना
घूम-फिरकर ज़िंदगी
जहाँ लोटना चाहती है |
अंशिका वर्मा
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष
1
हम हिंदी मां की संतान है,
और
यही हमारा अभिमान है |
आकांक्षा मिश्रा
बी ए प्रोग्राम, तृतीय वर्ष

मेरी बहन तू ग्रेट है

बिन बोले मुझे
समझ जाना
नाराज होने पर भी
मुझे मनाना।
बात-बात पर
मुंह फुलाना
फिर जिद से
अपनी बात मनवाना।
लाखों में मिलते
तेरे जैसे कुछ एक है
मेरी बहन
तू सबसे ग्रेट है।
अफसोस
इस बात का है,
तेरी शादी की
आ गई डेट है।
विदाई में तेरी
कुछ वक्त शेष है,
होना होगा दूर
इस बात का रिग्रेट है।
लाखों में मिलते
तेरे जैसे कुछ एक है
मेरी बहन
तू सबसे ग्रेट है।
गृहस्थी में सबसे
कुशल तो नहीं,
पर तेरा दिल
सबसे नेक है।
घर को खुशियों से भरना
तुझ में गुण
बस यह एक है।
तेरी तारीफ में
कुछ लिखना
मेरे लिए सबसे मुश्किल
काम बस यह एक है।
कभी रोना, कभी हंसना
हमारा रिश्ता भी लगता
चूहे बिल्ली का खेल है।
लाखों में मिलते
तेरे जैसे कुछ एक है
मेरी बहन तू सबसे ग्रेट है।
वंदना मिश्रा
हिन्दी विशेष, तृतीय वर्ष

जोकर

न जाने
कितने दर्दों को
दिल में छिपा कर
वह आते हैं,
अपनी जिंदगी को
भुलाकर वह
हमें हंसाते हैं|
पर क्या वह
अपने बच्चों को
वही खुशी दे पाते हैं,
वह शायद
चूक जाते होंगे |
कभी अपने परिवार की
इच्छाओं की पूर्ति में|
लेकिन हमारे
परिवार को तो वह
हंसी के ठहाके
ही लगवाते हैं|
डाल देते हैं
अपने सम्मान तक को
जोखिम में
अपने वजूद को मिटाकर
वह जोकर बन जाते हैं|
न जाने
कितने दर्दों को
दिल में छिपा कर
वह आते हैं|

प्रिया कुमारी
हिन्दी विशेष, तृतीय वर्ष

समय

समय
एक ऐसा मरहम है,
जो बड़े से बड़े
घावों को भर देता है|
ये जीवन में
कभी अंधियारा,
तो कभी
रोशनी भी कर देता है|
बेशक अभी समय
हमारी परीक्षा ले रहा है,
लेकिन अगर
गौर से देखें तो
ये हमें कई सीख भी
तो दे रहा है|
माना कि
यह दौर मुश्किल है,
पर भूलना नहीं
कि हम सब की
एक मंज़िल है|
उस मंज़िल को
हमें पाना है
और हर चुनौती को
पार कर जाना है|
लड़ना है-
मगर एक दूसरे से नहीं,
एक दूसरे के साथ
मिलकर लड़ना है
और इस
मुश्किल समय को हराना है|

प्रिया कुमारी
हिन्दी विशेष, तृतीय वर्ष

ऐसी थी नहीं

ऐसी थी नहीं
जैसी बन गई हूँ ।
जिंदगी के रंग में
ऐसे रंग गई हूँ ।
पर ऐसी थी नहीं मैं
जैसी अब बन गई हूं|
जिंदगी से पहले की हालात
को दूर कर अपने
आज से जोड़ रही हूँ मैं|
खुद की सुनती थी मैं,
दूसरों से कहती थी मैं,
पर अब ना
खुद की सुनती हूं,
ना दूसरों से कहती हूं।
पर एक बार फिर से
कह रही हूँ मैं
कि ऐसी थी नहीं
जैसी बन गई हूं।
बात-बात पर तुम
पूछते हो कि
क्यों रहती हूँ मैं अब
अकेले- और मैं तुमसे
बार-बार यह कह चुकी हूँ
कि ऐसी थी नहीं मैं
जैसी अब बन गई हूँ।
जानती हूँ मेरा
ऐसा होना पसंद
नहीं आ रहा है तुम्हें,
पर क्या करूं, ऐसी थी नहीं
मैं जैसी अब बन गई हूँ।

अंशु तिवारी
हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

कुछ और ही मंजूर था

लिखा था
उस ख्वाब को
हमने भी पन्नों में|
सोचा था पूरा करेंगे,
पर तकदीर को
कुछ और ही मंजूर था|
सोचा था मिलेंगे कभी
उनसे भी,
पर किस्मत को
कुछ और ही मंजूर था|
सजाए थे जो सपने
कभी हमने
उन बंद आंखों में,
पर खुली आंखों को
कुछ और ही मंजूर था।
सोचा ना था कि
कभी ऐसा भी होगा,
पर ऐसा हुआ
आखिर क्यों?
जब हम कुछ सोचते हैं,
वैसा होता क्यों नहीं?
जो पाने की
चाहत होती है
वो कभी
मिलता क्यों नहीं?

अनिता कुमारी
हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

सपनों को उगने दो

सपनों के पंख फैलाकर
इस जीवन रूपी
आकाश में
हमें भी उड़ने दो।
हमें भी हौसलों की
एक उड़ान भरने दो,
हमारे सपनों को उगने दो।
मत बंद करो
पिंजरे में बाबा
हमें भी उड़ने दो|
लिया है जन्म
हमने भी तो
हमारे सपनों
को भी उगने दो|
हौसलों की एक उड़ान
बाबा हमें भी भरने दो।
देकर देखो एक मौका,
जरा पंख तो फैलाने दो
करूंगी नाम रोशन आपका
बस एक उड़ान तो पाने दो।
दिया था जन्म तुमने मैया
तो आंगन की उस चिड़िया
को अब उड़ने भी दो।
भैया के हर सपनों की तरह
मेरे सपनों को
भी उगने दो ।
मुझे भी एक बार
आसमान की उड़ान भरने दो
मेरे सपनों को भी उड़ने दो।

नेहा
हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

उड़ने दो

धीरे-धीरे ही सही
उसने जीना
सीख लिया|
हालातों से
संभल कर
आगे बढ़ना
सीख लिया|
अपनी ख्वाहिशों
को लड़कर
पूरा करना
सीख लिया|
जीती थी हमेशा
दूसरों के लिए,
अब आख़िर
खुद के लिए
जीना सीख लिया है|
धीरे-धीरे ही सही
उसने उड़ना
सीख लिया है।।

रचना
हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

हमारी हिंदी

हिंदी को
कर रहे हैं लोग,
अपने दिलों से
अलविदा|
क्योंकि अपना
ली है उन्होंने
पश्चिमी सभ्यता|
मत करो नजरअंदाज
यूँ हिंदी को
क्योंकि यह है
हमारी मातृभाषा
जिससे है हमको
अनेकों आशा।
काम करने से पहले
जैसे करते हैं
हम विनती,
वैसी ही है
हमारी भाषा हिंदी|
मत बिछड़ने दो
इसे समाज से,
रखो दिल में
एक अंदाज से,
जैसे ईश्वर है
संसार में
वैसे ही अपनाओ
हिंदी को तुम प्यार से।
रीमा बिस्वास
हिंदी विशेष ,द्वितीय वर्ष

ना जाने क्यों

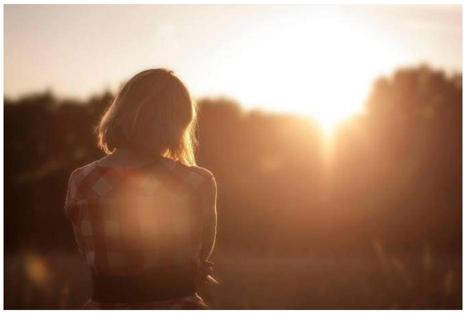

ना जाने क्यों
मन आजकल
उदास-सा रहता है|
ना जाने क्यों
अब सब कुछ
बेगाना सा लगता है|
ना जाने क्यों
अब कोई काम
करने की इच्छा
ही नहीं रही|
ना जाने क्यों
अब किसी से
बात करना भी
अजीब-सा लगता है|
अब तो ऐसा लगता है,
मानो जिंदगी में
कुछ बचा ही नहीं,
क्योंकि जीवन में
जिसकी कल्पना की थी,
वो मिला ही नहीं
और जो मिला
उसकी तो कल्पना
भी ना की थी ।
वंदना
हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

जिंदगी

जिंदगी का नाम है चलना,
चाहे आए कितने ही
गम जीवन में,
हो कितनी भी
निराशाएँ और भ्रम|
दुखों का हो
जितना बडा तूफान,
बस चलते रहना,
चलते ही रहना है|
जीवन में
परेशानियाँ आती हैं,
पर कुछ समय बाद
चली भी जाती हैं|
इसलिए कभी
निराश मत होना
आशा का अनुभव
हमेशा करते रहना|
बस चलते रहना,
चलते ही रहना है|
कहते हैं
इस जीवन का
हर पल मूल्यवान है,
देता है
जीवन में हर क्षण
एक नया अनुभव,
जीवन में हर समय
इक नया इतिहास हो,
जिस के बनने में
हमारा भी हाथ हो|
मीनाक्षी कुमारी
हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

मां

मां
कहने को तो
शब्द बहुत छोटा है,
पर इस शब्द की
गहराई को
कोई नहीं समझ सकता|
हम दुनिया के लिए
बेशक कुछ भी नहीं है,
पर हर बच्चा
अपनी मां के लिए
सब कुछ है|
एक औरत अपनी जिंदगी
समर्पित कर देती है
अपने बच्चों और
परिवार के लिए
और बदले में
नही माँगती
प्यार के सिवा
वो सिर्फ एक मां है|
इतना बड़ा
हो सकता है|
एक मां का दिल ही
सलाम है हर मां को|
गरिमा गौतम
हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

माँ

गोद में रहकर जिसकी
मिला है मुझे प्यार,
छोड़ सकती हूँ मैं
उसके लिए सारा संसार|
उंगली पकड़कर जिसकी
सीखा है मैंने चलना,
चलते-चलते सिखा दिया
मुझे गिरकर संभलना।
कहती है वह ला दूंगी
तेरे लिये चांद तारे,
करने के लिए खुश मुझे
छोड़ देती सुख सारे।
पाल-पोस कर किया
उसने मुझे बड़ा,
अंत में मेरे सामने
अतीत था मेरा खड़ा।
करना चाहती हूँ मैं भी
अब कुछ उसके लिए ,
छोड़े थे अपने सुख
जिसने मेरे लिए।
एक दिन तबीयत
खराब थीउसकी
जब बहुत ज्यादा,
तभी मैंने किया
खुद से एक वादा,
आई थी दुनिया में
मैं तेरे बाद,
जाना चाहती हूँ तेरे साथ।
इतना सुनते ही उसने
थाम लिया मेरा हाथ,
कहने लगी
रखना ख्याल तू अपना
मेरे जाने के बाद।
थोड़ी सी और करना
चाहती थी मैं उससे बात
मगर छोड़ गई
आधे सफर में वह मेरा साथ।

उपासना मीणा
हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

मैं बदलने लगी हूं

ख्वाब से अब
जरा जगने लगी हूं,
जिंदगी को बेहतर
समझने लगी हूं।
उड़ती थी शायद
कभी ऊंची हवा में,
जमीन पर पैदल
चलने लगी हूं।
लफ्जों की मुझको
जरूरत नहीं है,
चेहरों को जब से
मैं पढ़ने लगी हूं।
थक जाती हूँ अक्सर
जब शोर से,
खामोशियों से बातें
करने लगी हूं।
देखकर दुनिया की
बदलती तस्वीर, मैं कुछ-कुछ
बदलने लगी हूं।
नफरत के जहर को
मिटाना ही होगा,
इरादा यह मजबूत करने लगी हूं।
परवाह नहीं है,
कोई साथ आए मेरे
मैं अकेले ही आगे बढ़ने लगी हूं।

अनिता कुमारी
हिन्दी विशेष, तृतीय वर्ष

दोस्ती

दोस्तों की दोस्ती में
कभी कोई रूल
नहीं होता है और
ये सिखाने के लिए
कोई स्कूल नहीं होता है!
कौन कहता है
कि दोस्ती
बराबरी में होती है,
सच तो ये है
दोस्ती में सब
बराबर होते है!
जो रोते हुए को हँसा दे
वो है दोस्ती,
जो हारे को भी
जिता दे, वो है दोस्ती|
ना जाने ये दोस्ती आज
किस मोड़ पर आ गई,
जो हँसते थे साथ कभी,
लड़ते थे साथ कभी,
आज उन्ही से मिलने को
तरसते है सभी|
दोस्ती में सच्चाई
और दोस्ती में अच्छाई
कभी कम नहीं होती
अगर मिल जाए
सच्चे दोस्त तो
दोस्ती कभी खत्म
नहीं होती|

अंजू
हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

घुमक्कड़ी का रिश्ता

एक कप चाय
और घुमक्कड़ी का रिश्ता
बहुत ही गहरा है|
दूसरों का तो पता नहीं,
लेकिन मेरी कोई भी चाय
घुमक्कड़ी के बिना अधूरी है।
घुमक्कड़ी के साथ मेरा रिश्ता
घड़ी की सुई जैसा है।
कभी हम मिलते हैं, कभी नहीं।
मेरे अनुभव से जो इंसान
करता है परहेज घूमने-फिरने से
और नाक चढ़ाता है।
जन्म लेना ही व्यर्थ है।
उसका इस संसार में
घूमते हुए लगा सकते हैं
हम, जिंदगी की
हसीन वादियों में गोते
और बन सकते हैं जिंदादिल।
घुमक्कड़ी मेरी मोहब्बत है,
ले जाती है मुझे
सौ प्रतिशत सुकून तक|
मनुष्य के मनोविकार
मात्र सफर करने से ही
नष्ट हो जाएंगे।
जन्म इंसान का अनमोल
उठा सकता है लाभ|
जो घुमक्कड़ी से
रिश्ता नहीं रखता है।
वही घर की चारदीवारीओं में
घुट-घुट कर मरने की
सीढ़ियाँ चढ़ता है।

तान्या लोहिया
हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

जीवन एक संघर्ष है

मेरे लिये
जीवन एक संघर्ष है
मेरे जिद्दी इरादों से,
मेरी सच्ची मेहनत से|
अभी तो इस
परिंदे का इम्तिहान
बाकी है।
संघर्ष है तपती धूप,
अंधेरी रातों से,
दिखावे के प्यार,
झूठे जज्बातों से|
अभी-तो लड़ना है
समुद्रों से,
अभी तो पूरा
आसमान बाकी है|
जीवन एक संघर्ष है,
कभी गम तो कभी हर्ष है।

गरिमा गौतम
हिंदी विशेष,तृतीय वर्ष

विवाह और समाज

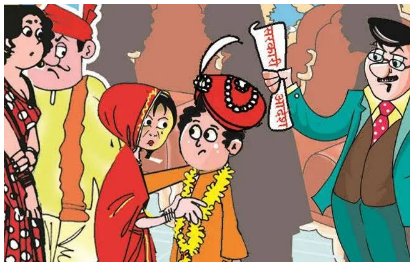

विवाह एक सामाजिक व्यवस्था है| स्वस्थ समाज की स्थापना में विवाह का एक महत्वपूर्ण स्थान है जिसके बिना समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। लेकिन आज विवाह अभिशाप बन कर रह गया है क्योंकि यह एक सामाजिक संस्था का रूप ले चुका है और समाज इसे धर्म से जोड़ चुका है| विवाह धर्म के आधार पर होते हैं जैसे इस्लाम, हिंदू, ईसाई, सिख आदि। भारत में आंकड़ों को देखकर यह बात सत्य मानी जा सकती है। विवाह को धर्म से जोड़ कर स्त्री जाति की स्वतंत्रता का हनन किया जाता है| इस्लाम धर्म में पुरुषों के बहुपत्नीवाद पर कोई प्रश्न नहीं है बल्कि पूर्ण समर्थन प्राप्त है| यही कोई स्त्री ऐसा करे तो उससे संस्कृति को खतरा हो जाता है| इसी प्रकार हिंदू रीति से होने वाले विवाह में दहेज प्रथा सामने आती है| इस प्रश्न पर तो अवश्य विचार करना चाहिए कि दहेज क्यों? कन्या पक्ष यह सोचकर दहेज दे देता है कि बेटी खुश रहे| लेकिन सच तो यह है कि दहेज मांग कर तो आप अपना बेटा बेच रहे हैं, तो विवाह के नाम पर यह मोलतोल क्यों? धर्म के नाम पर असमानता और दहेज दोनों मिल कर समाज को तोड़ रहे हैं। लड़के लड़की की पसंद-नापसंद का मानो कोई अर्थ रह ही नहीं गया। धर्म का नाम जोड़कर इसे धन प्राप्ति का माध्यम बनाया जा रहा है। इसी कारण पति-पत्नी के जीवन में जटिलता आती है। पुरुष यह सोच कर समर्थन करता है कि अच्छी पत्नी के साथ अच्छा धन भी पालें। इतनी खराब सोच को जन्म दे रहा है तो एक सुखद समाज और वैवाहिक जीवन का होना असंभव है। विवाह एक मांगलिक कार्य है और इस वर्तमान स्थिति में सहजीवन का ह्रास हो रहा है| मनुष्य में सहजीवन की भावना कम और धन प्रधान हो रहा है। पत्नी को पति या उसके घर वाले दहेज के लिए जला कर मार डालें इससे भयानक स्थिति क्या होगी? इसके लिए कानून है, परंतु हर काम सरकार ही करेगी तो हमारे "लोकतंत्र और व्यक्तित्व "का क्या अर्थ रह जाएगा? सब काम सरकार ही करेगी तो समाज, हम और आप क्या करेंगे? समाज द्वारा अपनी जिम्मेदारी समझे बिना ऐसी समस्याओं का अंत होना बहुत कठिन है| हमें खुद को बदलना होगा,ऐसे समाज से मुक्ति पानी होगी और एक स्वस्थ समाज की स्थापना करनी होगी।

पीयूषि
हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

स्त्री और सुरक्षा

स्त्री समाज का एक महत्वपूर्ण तथा अभिन्न अंग है। स्त्री के बिना सृष्टि की कल्पना नहीं की जा सकती। स्त्री सुरक्षा चिंता का विषय बन कर उभर रहा है। स्त्री पुरुषों के समान अधिकार रखती है परंतु स्त्री के साथ होने वाले अपराधों को नकारा भी नहीं जा सकता। विश्व में ऐसी स्त्रियाँ बहुत अधिक है, जिन्हें अपने अधिकारों के बारे में जानकारी नहीं है।प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक स्त्रियों की स्थिति में काफी परिवर्तन हुआ है वर्तमान समय में स्त्रियों के साथ होने वाले अपराधों में बढ़ोतरी हो रही है| भ्रूण हत्या, बलात्कार, मानसिक तथा शारीरिक प्रताड़ना, यौन शोषण, तेजाब फेंकना, छेड़छाड़, दहेज़ प्रथा आदि को अनेक स्थानों पर देखा जा सकता है। ऐसी स्थिति में स्त्री सुरक्षा का विषय अत्यंत विचाराधीन बन जाता है। आये दिन स्त्रियों के साथ अपराधों के मामले होते जा रहे हैं इसमें सबसे ज्यादा दुष्कर्म के मामले हैं। चाहे वह छोटी बच्ची हो या महिला सभी उम्र में यह मामले तेजी से बढ़ रहे हैं । कई छोटी सोच के लोग इसका दोष स्त्रियों के छोटे कपड़ों को बताते हैं। इतना ही नहीं सभ्य कहे जाने वाले समाजों में स्त्रियों को पुरुषों की संपत्ति माना जाता है। स्त्री केवल भोग विलास की वस्तु समझी जाती है। भारत में स्त्रियों को देवी की संज्ञा दी गई है| कहा भी गया है-

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता"

अर्थात जहां स्त्रियों का सम्मान होता है वहीं भगवान का वास होता है। परंतु फिर भी स्त्री स्वयं को सुरक्षित महसूस नहीं करती। स्त्री सुरक्षा के कायदे-कानून होने के बावजूद उनके साथ ऐसी घटनाएँ बढ़ती जा रही हैं। स्त्री न घर में सुरक्षित है न ही घर के बाहर सुरक्षित है। आज स्त्री पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने के लिए तत्पर है परंतु उनके साथ कार्यालय में भी घटनाएँ घटित होती रहती हैं। आज के बदलते दौर में नारी की सुरक्षा एक प्रश्न चिन्ह है। इसका एक कारण पुरुष प्रधान समाज भी है जो महिलाओं के साथ होने वाले अपराधों को बढ़ावा देता है। महिलाओं के साथ साइबर क्राइम जनित घटनाओं में भी वृद्धि हो रही है| जो समाज तथा नारी दोनों के लिए ख़तरा है। इसके अलावा फिल्म और धारावाहिकों में दिखाए जाने वाले दृश्य नकारात्मक विचारों को जागृत कर देते हैं जिसके कारण भी अपराध बढ़ रहे हैं।

निष्कर्षत: स्त्री की स्थिति अत्यंत खराब होती जा रही है स्त्री सुरक्षा समाज, देश तथा विश्व के लिए प्रश्न चिन्ह है। स्त्री सुरक्षा के लिए सबसे पहले स्त्री को ही आगे आना होगा। स्त्री को स्वयं मजबूत होना होगा। प्रत्येक स्त्री को आत्मरक्षा का प्रशिक्षण लेना चाहिए, जिससे वह स्वयं की रक्षा कर सके, दूसरों पर निर्भर न रहे। चाहे बेटी हो या बेटा हमें अपने बच्चों में नैतिकता का विकास करना चाहिए| यदि कोई बुरा व्यवहार करें तो उसी क्षण उसका जवाब दें, इससे स्त्री का आत्मविश्वास बढ़ेगा। महिलाओं के साथ-साथ पुरुषों में भी संवेदना जागृत करने का प्रशिक्षण देना चाहिए। समाज को स्त्रियों को दबाने की बजाय सहयोग करना चाहिए। स्त्रियों को अपने साथ मिर्च स्प्रे रखना चाहिए, जिसके द्वारा अपनी सुरक्षा स्वयं कर सकते हैं। नारी के प्रति बढ़ते अपराधों के मामले में कायदे-कानूनों का कठोरता से पालन किया जाना चाहिए जिससे प्रत्येक नारी स्वयं को सुरक्षित महसूस कर सके।

काजल
बी.ए. प्रोग्राम, तृतीय वर्ष

सपनों की दुनिया

सपने हम सभी सपने देखते हैं। परन्तु उन सपनों को हक़ीक़त में तबदील करना कुछ लोग ही जानते हैं या आप ये भी कहे सकते हैं कि उन्हें अपने जीवन में कुछ कल्पनाओं को पूरा करना सही प्रतीत होता है | एक छोटी सी लड़की की कल्पनाओं के सच होने के स्तर को हम उसके सपनों से जान सकते हैं | एक लड़की के छोटे-छोटे सपने होते हैं। वह एक छोटे से खिलौने को सपने में देखती है परन्तु बाज़ार में जो गुड़िया उसे पसंद आयी, उसे वह पैसों की कमी के कारण ख़रीद ना पायी |वह उस गुड़िया को रोज़ अपने सपनों में देखती और उसे अपने पास ही पाती | सपनों में वह उसे हमेशा अपने पास रखती| वास्तविक जीवन में भी उसे अपने निकट पाती |एक दिन उसके स्कूल में एक छोटी सी प्रतियोगिता आयोजित होती है| उसमें कई प्रकार के खिलौने इनाम के रूप में थे| वह भी इस प्रतियोगिता में भाग लेती है तथा जीत कर खिलौने प्राप्त करती है| परन्तु खिलौने की पैकिंग से पता नहीं चलता कि उसे कौन सा खिलौना मिला है ? वह खुश हो कर घर जाकर जब उसे खोलती है तो हैरान रह जाती है क्योंकि पैकेट में उसके सपनों वाली गुडिया मिलती है| वह उसे देख कर खुश हो कर अपने गले से लगा लेती है|उसका सपना सच होने पर उसे बड़ी खुशी मिलती है| उसका अपनी गुड़िया को लेकर विश्वास रखना और उसे हमेशा अपने निकट पाना सपने का हकीकत में बदलना था | हमें भी अपने सपनों को लेकर एक दृढ़ विश्वास होना चाहिए | सपनों को सच में बदलने के लिए मेहनत भी महत्त्वपूर्ण है| कभी हार ना मानना भी हमें लक्ष्य की ओर ले जाता है|

कोमल नागर
हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

रंग-संयोजन

मुझे उड़ने दो

महिमा शर्मा
हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष

मुरली मनोहर

महिमा शर्मा
हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष

अद्भुत प्रकृति

महिमा शर्मा
हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष

एकदन्त दयावन्त

भावना शर्मा
हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

सारंग

भावना शर्मा
हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

नीलाम्बुज

पिया धवन
हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष

चक्षु कलश

पिया धवन
हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष

आद्या शक्ति

अनीता
हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

चंद्रमौलि

अनीता
हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

आमने-सामने

अनीता
हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

कुरंग

मोनिका मिश्रा
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

रात में गुफ़्तगू

मोनिका मिश्रा
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

खिलती कलियाँ

मोनिका मिश्रा
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

कैमरा और कॉलेज परिसर

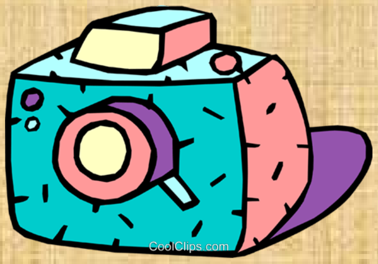

1

प्रिंकी यादव
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

2

प्रिंकी यादव
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

3

अंशिका वर्मा
हिंदी विशेष ,द्वितीय वर्ष

4

आरती यादव
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

5

पायल
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

6

पायल
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

7

नीतू देवी
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

8

नीतू देवी
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

9

नीतू देवी
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

10

नीतू देवी
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

11

सारिका दुबे
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

12

सारिका दुबे
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

13

सारिका दुबे
हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

मैत्रेयी कॉलेज

प्रतिबद्धता

राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कॉलेज को ज्ञान केन्द्र के रूप में प्रतिष्ठित करना